अंक -49 माह –अप्रैल सत्र-२०२२-२०२३

उड़ान

भाऊराव देवरस सरस्वती विद्या मंदिर

एच-107,सैक्टर -12, नॉएडा

विद्यालय ई-पत्रिका विमोचन

आज दिनांक 1 अप्रैल को विद्यालय की ई-पत्रिका का विमोचन किया गया |इस पत्रिका ने पूरे माह विद्यालय में हुई सभी गतिविधियों की जानकारी होती है | इस माह की पत्रिका विमोचन के समय नव-निर्वाचित प्रधानाचार्य श्रीमान सोम गिरी गोस्वामी जी, आचार्य राजेश जी उपस्थित थे |

भगवान महावीर जयंती (आचार्या शिखा जी)

भगवान महावीर स्वामी का जन्म ईसा से ५९९ वर्ष पूर्व कुंडग्राम (बिहार), भारत मे हुआ था। वर्तमान में वैशाली के (बिहार) वासोकुण्ड को यह स्थान माना जाता है। वें तीर्थंकर२३ पार्श्वनाथ जी के निर्वाण)मोक्ष) प्राप्त करने के 188 वर्ष बाद इनका जन्म हुआ था। जैन ग्रन्थों के अनुसार जन्म के बाद देवों के मुखिया, इन्द्र ने मेरु पर्वत पर ले जाकर बालक का क्षीर सागर के जल से अभिषेक कर नगर में आया। वीर और श्रीवर्धमान यह दो नाम रखे और उत्सव किया। इसे ही जन्म कल्याणक कहते है। हर तीर्थंकर के जीवन में पंचकल्याणक मनाए जाते है। गर्भ अवतरण के समय तीर्थंकर महावीर की माता त्रिशला ने १६ शुभ स्वप्न देखे थे जिनका फल राजा सिद्धार्थ ने बताया था।इस महोत्सव पर जैन मंदिरों को विशेष रूप से सजाया जाता है। भारत में कई जगहों पर जैन समुदाय द्वारा अहिंसा रैली निकाली जाती है। इस अवसर पर गरीब एवं जरुरतमंदों को दान दिया जाता है।

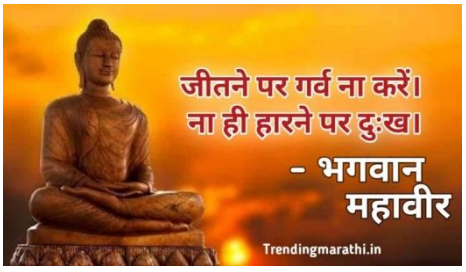

विशिष्ट उपलब्धि

आज विद्यालय में वंदना सत्र में इफको टोकियो द्वारा आयोजित नेशनल मैराथन और भागता भारत प्रतियोगिता में विद्यालय के भैया सानू और नमन ने विभिन्न पुरस्कार जीते। प्रधानाचार्य जी द्वारा उनको सम्मानित किया गया। दोनों भैया ने मिलकर कुल 8 पुरस्कार जीते विद्यालय परिवार उनके उज्जवल भविष्य के लिए उनको शुभकामनाएं प्रदान करता है।

डॉ भीमराव आम्बेडकर जयंती

भीमराव रामजी आम्बेडकर (14 अप्रैल, 1891 – 6 दिसंबर, 1956), **डॉ॰ बाबासाहब आम्बेडकर** नाम से लोकप्रिय, भारतीय बहुज्ञ, विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ, और समाजसुधारक थे। उन्होंने दलित बौद्ध आंदोलन को प्रेरित किया और अछूतों (दलितों) से सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध अभियान चलाया था। श्रमिकों, किसानों और महिलाओं के अधिकारों का समर्थन भी किया था। वे स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि एवं न्याय मन्त्री, भारतीय संविधान के जनक एवं भारत गणराज्य के निर्माताओं में से एक थे। आम्बेडकर विपुल प्रतिभा के छात्र थे। उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स दोनों ही विश्वविद्यालयों से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधियाँ प्राप्त कीं तथा विधि, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में शोध कार्य भी किये थे। व्यावसायिक जीवन के आरम्भिक भाग में ये अर्थशास्त्र के प्रोफेसर रहे एवं वकालत भी की तथा बाद का जीवन राजनीतिक गतिविधियों में अधिक बीता। इसके बाद आम्बेडकर भारत की स्वतंत्रता के लिए प्रचार और चर्चाओं में शामिल हो गए और पत्रिकाओं को प्रकाशित करने, राजनीतिक अधिकारों की वकालत करने और दलितों के लिए सामाजिक स्वतंत्रता की वकालत की और भारत के निर्माण में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

हिंदू पंथ में व्याप्त कुरूतियों और छुआछूत की प्रथा से तंग आकार सन 1956 में उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया था। सन 1990 में, उन्हें भारत रत्न, भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से मरणोपरांत सम्मानित किया गया था। 14 अप्रैल को उनका जन्म दिवस आम्बेडकर जयंती के तौर पर भारत समेत दुनिया भर में मनाया जाता है। डॉक्टर आम्बेडकर की विरासत में लोकप्रिय संस्कृति में कई स्मारक और चित्रण शामिल हैं।

श्री हनुमान जन्मोत्सव

हनुमान जन्मोत्सव एक पर्व है। यह चैत्र माह की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस दिन हनुमानजी का जन्म हुआ था यह माना जाता है। हनुमान जी को कलयुग में सबसे प्रभावशाली देवताओं में से एक माना जाता है।माता अंजनी की गोद में बैठे हनुमान की पल्लव कालीन कांस्य प्रतिमा विष्णु जी के राम अवतार के बाद रावण को दिव्य शक्ति प्रदान हो गई। जिससे रावण ने अपनी मोक्ष प्राप्ति हेतु शिवजी से वरदान माँगा की तब शिवजी ने राम के हाथों मोक्ष प्रदान करने के लिए लीला रची । शिवजी की लीला के अनुसार उन्होंने हनुमान के रूप में जन्म लिया ताकि रावण को मोक्ष दिलवा सके। इस कार्य में रामजी का साथ देने हेतु स्वयं शिवजी के अवतार हनुमान जी आये थे, जो की सदा के लिए अमर हो गए। रावण के वरदान के अनुसार उन्हे मृत्यु के साथ साथ उसे मोक्ष भी दिलवाया।

हनुमान जयन्ती को लोग हनुमान मन्दिर में दर्शन हेतु जाते है। कुछ लोग व्रत भी धारण कर बड़ी उत्सुकता और ऊर्जा के साथ समर्पित होकर इनकी पूजा करते है। यतः यह कहा जाता है कि ये बाल ब्रह्मचारी थे अतः इन्हे जनेऊ भी पहनाई जाती है। हनुमानजी की मूर्तियों पर सिन्दूर और चाँदी का वर्क चढ़ाने की परम्परा[2] है। कहा जाता है राम की लम्बी आयु के लिए एक बार हनुमान जी अपने पूरे शरीर पर सिन्दूर चढ़ा लिया था और इसी कारण उन्हें और उनके भक्तो को सिन्दूर चढ़ाना बहुत अच्छा लगता है जिसे चोला कहते है। संध्या के समय दक्षिण मुखी हनुमान मूर्ति के सामने शुद्ध होकर मन्त्र जाप करने को अत्यन्त महत्त्व दिया जाता है। हनुमान जयन्ती पर रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड पाठ को पढना भी हनुमानजी को प्रसन्न करता है। सभी मन्दिरो में इस दिन तुलसीदास कृत रामचरितमानस एवं हनुमान चालीसा[3] का पाठ होता है। स्थान स्थान पर भण्डारे आयोजित किये जाते है। तमिलानाडु व केरल में हनुमान जयन्ती मार्गशीर्ष माह की अमावस्या को तथा

उड़ीसा में वैशाख महीने के पहले दिन मनाई जाती है। वहीं कर्नाटक व आन्ध्र प्रदेश में चैत्र पूर्णिमा से लेकर वैशाख महीने के 10वें दिन तक यह त्योहार मनाया जाता है।

क्लब और उनकी गतिविधियाँ

संगीत एवं नृत्य क्लब :-संगीत विभाग में गायन, ताल वादन और हारमोनियम वादन तीन समूह बनाकर भईया-बहिनों को वर्गीकृत करके क्रमशः अलंकार, वार्षिक गीत, कहरवा ताल, दादरा ताल का क्रियात्मक अभ्यास कराया गया।

फोटोग्राफी एवं मैगजीन क्लब :- इस क्लब के अंतर्गत भैया बहनों को विद्यालय में उपलब्ध कैमरे की बैसिक जानकारी जी गई | किसी फोटो में रंग, आकर, प्रकार आदि की एडिटिंग सिखाई गई |

क्रिएटिव क्लब :- क्रिएटिव क्लब मैं आज 37 बच्चों की उपस्थिति रही आज बच्चों को क्रिएटिव क्लब के बारे में और इसमें क्या क्या सिखाया जाएगा किस तरीके से काम करना है आदि की जानकारी दी गई बच्चों ने अपने हाथ से पेपर झालर बनाना और कागज के फूल बनाना सिखा बच्चों ने कार्य को बहुत ही उत्सुकता पूर्वक आनंद के साथ सीखा।
क्लब प्रमुख। सरिता भारती, मोनिका जी

Science and technology :-

Activity

1.classfication of objects in terns of boys and girls

2 identification of odd and even number from total no of students

3- identification of natural and man made material

4- identification of acid base from unknown sample by ph paper

9b class activities

1 conversion of roll no in to atomic numbers of elements

2- To know the compressibility of solid and gases

3 surface essential to balance the objects

शारीरिक,योग,खेल व स्वास्थ्य :- आज शारीरिक,योग,खेल व स्वास्थ्य के क्लब द्वारा छात्र - छात्राओं को योगिक अभ्यास व सुक्षम खेल की गतिविधियां कराई गई। □ ♂□ ♀□ ♂□ □

नॉन फायर कुकिंग क्लब :- इस क्लब में आज कक्षा षष्ठ से अष्टम तक के भैया बहनों ने भाग लिया । जिसमें उन्हें इस क्लब के बारे में जानकारी प्रदान की गई तथा हम बिना गैस या किसी तैयारी के झटपट कैसे कोई व्यंजन तैयार कर सकते हैं। इसके बारे में बताया गया । भैया बहनों ने भी अत्यधिक उत्साह के साथ में इस क्लब में भाग लिया और स्वयं से भी कुछ व्यंजन बनाने के बारे में चर्चा की।
क्लब प्रमुख
पूनम माथुर

LITERACY CLUB

Group Activities

Today our students performed the following activities:

1. Vocabulary building
2. How to introduce ourselves
3. Maths activity that includes TIME TABLES based game
4. Idioms

Each student participated with zeal and great interest. It is a wonderful session to be with them.

The team of teachers include DHEERAJ SHARMA, VIKASH ARYA, DEVLOK ANAND & REENA CHOUDHARY.

इको हेरिटेज क्लब :- आज दिनांक 15 /4/ 2023 को विद्यालय में इको हेरिटेज क्लब के अंतर्गत विद्यार्थियों ने निम्न गतिविधियों का आयोजन किया गया ।जिसके अंतर्गत भैया बहनों ने सबसे पहले पृथ्वी दिवस 22 अप्रैल को मनाया जाता है ,के बारे में जानकारी प्राप्त की ।उसके पश्चात दूसरी एक्टिविटी विद्यार्थियों ने Eco bricks बनाना सीखें, इसमें व्यर्थ पॉलिथीन एक बोतल में भरकर एक जगह रखा जाता है, जिससे हम पृथ्वी को प्रदूषण को बचा सकते हैं ।विद्यालय में पौधारोपण का आयोजन किया गया जिसमें विद्यार्थियों ने किस प्रकार पौधों का रोपण किया जाता है यह सीखा।

विश्व विरासत दिवस

विश्व विरासत दिवस जिसे स्मारकों और स्थलों के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस भी कहा जाता है | दुनिया भर में सांस्कृतिक विरासत स्थलों और स्मारकों के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने का दिन है। यह हर साल 18 अप्रैल को मनाया जाता है। 1982 में इंटरनेशनल काउंसिल ऑन मॉन्यूमेंट्स एंड साइट्स द्वारा इसे स्थापित किया गया था। इस दिन का उद्देश्य ऐतिहासिक संरचनाओं, स्थलों और पुरातात्विक स्थलों सहित सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना और वैश्विक विरासत की विविधता का जश्न मनाना है।

इस दिन का उद्देश्य सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के महत्व की पहचान को बढ़ावा देना है और इसके संरक्षण और इसमें सक्रिय रूप से शामिल होते हुए विश्व विरासत की बहुलता की सराहना करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करना है।

विश्व विरासत दिवस का इतिहास

1982 में, इंटरनेशनल काउंसिल ऑन मॉन्यूमेंट्स एंड साइट्स ने 18 अप्रैल को स्मारकों और स्थलों के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस (आईडीएमएस) के रूप में स्थापित किया। इसके बाद यूनेस्को ने अपने 22वें आम सम्मेलन के दौरान इसे अपनाया। हर साल, इंटरनेशनल काउंसिल ऑन मॉन्यूमेंट्स एंड साइट्स अपने सदस्यों और भागीदारों द्वारा आयोजित की जाने वाली गतिविधियों के लिए एक थीम प्रस्तावित करता है।

क्या है विश्व विरासत दिवस 2023 की थीम?

विश्व विरासत दिवस हर साल एक अलग विषय पर प्रकाश डालता है जो सांस्कृतिक विरासत के एक विशिष्ट पहलू के आसपास केंद्रित होता है। 2022 की थीम "विरासत और जलवायु" थी, जबकि 2023 की थीम "विरासत परिवर्तन" या 'हेरिटेज चेंज' है।

पहले वाला विषय जलवायु पर कार्रवाई करने के संदर्भ में पारंपरिक ज्ञान और ज्ञान प्रणालियों को समझने से संबंधित मुद्दों को हल करने का अवसर प्रदान करता है। यह जलवायु कार्रवाई में कमजोर समुदायों के लिए उचित सुरक्षा का समर्थन करने और संयुक्त राष्ट्र की कार्रवाई के जवाब देने में सांस्कृतिक विरासत की भूमिका पर भी जोर देता है।

विश्व धरोहर स्थलों का महत्व

विश्व धरोहर स्थल असाधारण सांस्कृतिक या प्राकृतिक महत्व के स्थान हैं और यूनेस्को द्वारा उनके उत्कृष्ट सार्वभौमिक महत्व के लिए मान्यता दी है। इन स्थलों में प्राचीन खंडहर, ऐतिहासिक स्मारक, प्राकृतिक परिदृश्य और सांस्कृतिक प्रथाएं शामिल हैं।

विश्व विरासत स्थल महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे किसी देश या क्षेत्र के इतिहास और संस्कृति में एक अनोखी जानकारी प्रदान करते हैं। वे अक्सर लोकप्रिय पर्यटन स्थल होते हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं। हालांकि, भविष्य की पीढ़ियों के लिए उनके निरंतर अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए उन्हें संरक्षित किया जाना चाहिए।

विश्व धरोहर स्थलों का संरक्षण

विश्व विरासत स्थलों का संरक्षण यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि वे हमारे अतीत और सांस्कृतिक विरासत की जानकारी प्रदान करते रहें। यह विभिन्न उपायों के माध्यम से हासिल किया जा सकता है, जैसे: इमारतों और संरचनाओं का संरक्षण और जीर्णोद्धार, इसमें ऐतिहासिक इमारतों और संरचनाओं की लंबी उम्र सुनिश्चित करने के लिए मरम्मत और रखरखाव शामिल है।

प्राकृतिक स्थलों का संरक्षण और प्रबंधन: इसमें राष्ट्रीय उद्यानों जैसे प्राकृतिक स्थलों का प्रबंधन शामिल है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे अक्षुण्ण और मानवीय अशांति से मुक्त रहें।

शिक्षा और जागरूकता बढ़ाना: इसमें लोगों को सांस्कृतिक विरासत के महत्व और इसकी रक्षा करने की आवश्यकता के बारे में शिक्षित करना शामिल है।

धन और सहायता: इसमें वित्तीय सहायता और संसाधन प्रदान करना शामिल है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सांस्कृतिक विरासत स्थलों का उचित रखरखाव और संरक्षण किया जा रहा है।

विश्व पुस्तक दिवस

23 अप्रैल को पूरे विश्व के लोगों के द्वारा हर वर्ष मनाया जाने वाला विश्व पुस्तक दिवस एक वार्षिक कार्यक्रम है। पढ़ना, प्रकाशन और प्रकाशनाधिकार को पूरी दुनिया में लोगों के बीच बढ़ावा देने के लिये यूनेस्को द्वारा सालाना आयोजित ये बहुत ही महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। 23 अप्रैल को इसे मनाने के बजाय, यूनाईटेड किंग्डम में मार्च के पहले गुरुवार को इसे मनाया जाता है। 23 अप्रैल 1995 में पहली बार यूनेस्को द्वारा विश्व पुस्तक दिवस की शुरुआत की गयी।
आमतौर पर, इसे लेखक, चित्रकार के द्वारा आम लोगों के बीच में पढ़ने को प्रोत्साहन देने के लिये मनाया जाता है। किताबों को और पढ़ने के लिये ये विश्व स्तर का उत्सव है और 100 से ज्यादा देशों में मनाया जाता है।

विश्व पुस्तक दिवस का इतिहास

पूरे विश्व में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वार्षिक आधार पर विश्व पुस्तक दिवस को मनाने के पीछे बहुत सी कहानियाँ हैं। मीगुएल डी सरवेंटस नाम से सबसे प्रसिद्ध लेखक को श्रद्धांजलि देने के लिये स्पेन के विभिन्न किताब बेचने वालों के द्वारा वर्ष 1923 में पहली बार 23 अप्रैल की तारीख अर्थात् विश्व पुस्तक दिवस और किताबों के बीच संबंध स्थापित हुआ था। ये दिन मीगुएल डी सरवेंटस की पुण्यतिथि है।
विश्व पुस्तक दिवस और प्रकाशनाधिकार दिवस को मनाने के लिये यूनेस्को द्वारा 1995 में पहली बार विश्व पुस्तक दिवस की सटीक तारीख की स्थापना हुयी थी। यूनेस्को के द्वारा इसे 23 अप्रैल को मनाने का फैसला किया गया था क्योंकि, ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार, विलियम शेक्सपियर, व्लादिमीर नबोकोव, मैमुएल सेजिया वैलेजो का जन्म और मृत्यु वर्षगाँठ, मीगुअल डी सरवेंटस (22 अप्रैल को मृत्यु और 23 अप्रैल को दफनाए गये), जोसेफ प्ला, इंका गारसीलासो डी ला वेगा का मृत्यु वर्षगाँठ और मैनुअल वैलेजो, मॉरिस द्रुओन और हॉलडोर लैक्सनेस का जन्म वर्षगाँठ होता है।
बाजार या प्रसिद्ध किताब की दुकानों से कुछ मजाकिया और रोचक किताबों को खरीदने और पढ़ने के द्वारा विश्व पुस्तक दिवस को मनाने में कोई भी शामिल हो सकता है जहाँ सभी पसंसदीदा किताब ब्रैंड, चरित्र या लेखक पर आधारित होती है। लेखकों और दूसरी महत्वपूर्ण बातों के बारे में जानने के लिये उनमें जिज्ञासा उत्पन्न करने के साथ ही पढ़ने की आदत के लिये बच्चों को पास लाने में विश्व पुस्तक दिवस एक बड़ी भूमिका अदा करता है।
बच्चों के बीच पढ़ने की आदत को आसानी से बढ़ावा देना, कॉपीराइट का प्रयोग कर बौद्धिक संपत्ति का प्रकाशन और सुरक्षित रखने के लिये यूनेस्को द्वारा पूरे विश्व भर में इसे मनाने की शुरुआत हुयी। विश्व साहित्य के लिये 23 अप्रैल एक महत्वपूर्ण तारीख है क्योंकि 23 अप्रैल 1616 कई महान हस्तियों की मृत्यु वर्षगाँठ थी।
किताबों और लेखकों को श्रद्धांजलि देने के लिये पूरे विश्व भर के लोगों का ध्यान खींचने के लिये यूनेस्को द्वारा इस तारीख की घोषणा की गयी। लोगों और देश की सामाजिक और सांस्कृतिक विकास की ओर अपने विशेष योगदानों के लिये नये विचारों को उत्पन्न करने के साथ ही किताबों के बीच असली खुशी और ज्ञान की खोज करने तथा किताबें पढ़ने के लिये ये आम लोगों खासतौर से युवाओं को प्रोत्साहित करता है। ग्राहक को हर एक किताब पर एक गुलाब देने से वो किताबें पढ़ने के लिये प्रोत्साहित होंगे और सम्मानित महसूस करेंगे।
शिक्षकों, लेखकों, प्रकाशकों, लाइब्रेरियन, सभी निजी और सरकारी शैक्षणिक संस्थानों, एनजीओ, कार्यरत लोगों का समूह, मास मीडिया आदि के द्वारा खासतौर से विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस मनाया जाता है। यूनेस्को राष्ट्रीय परिषद, यूनेस्को क्लब, केन्द्रीय संस्थान, लाइब्रेरी, स्कूल और दूसरे शैक्षणिक संस्थानों के द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।
प्रसिद्ध लेखकों के द्वारा लिखी गयी नवीनतम किताबों के संग्रह को प्राप्त करने के लिये लाइब्रेरी की सदस्यता के लिये कार्यरत समूह के लोग प्रोत्साहन देते हैं। विभिन्न क्रिया-कलाप जैसे दृश्यात्मक कला, नाटक, कार्यशाला कार्यक्रम आदि लोगों को प्रोत्साहित करने के लिये अधिक सहायक हो सकता है।

आम सभा में यूनेस्को के द्वारा विश्व पुस्तक दिवस उत्सव की तारीख को निश्चित किया गया जो 1995 में पेरिस में रखा गया था। लगभग 100 देशों से अधिक इच्छुक लोग ऐच्छिक संगठनों, विश्वविद्यालयों स्कूलों, सरकारी या पेशेवर समूहों, निजी व्यापार आदि से जुड़ें। विश्व पुस्तक और कॉपीरइट दिवस उत्सव विश्व भर के सभी महाद्वीपों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से लोगों को आकर्षित करता है। ये लोगों को नये विचार को खोजने और अपने ज्ञान को फैलाने में सक्षम बनाता है। किताबें विरासत का ख़ज़ाना, संस्कृति, ज्ञान की खिड़की, संवाद के लिये यंत्र, संपन्नता का स्रोत आदि हैं।

विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस उत्सव ने विभिन्न देशों से ढ़ेर सारे पेशेवर संगठनों को प्रेरित किया है और यूनेस्कों से सहायिकी प्राप्त की है। दूसरे लोगों तक विभिन्न प्रकार की संस्कृति को फैलाने के साथ ही उनको साथ लाने के लिये लोगों के बीच किताबों की शक्ति को प्रचारित करने के लिये हर साल यूनेस्कों का विश्वव्यापी सदस्य राज्य इस कार्यक्रम को मनाता है। सुविधा से वंचित भाग में रहने वाले लोगों के साथ ही युवा लोगों के बीच शिक्षा को प्रचारित करने के लिये ये दिन मनाया जाता है।

इस दिन, उपन्यास, लघु कहानियाँ या शांति फैलाने वाला चित्र किताब, उदारता, दूसरी संस्कृति और परंपरा के लिये एक-दूसरे के बीच समझदारी और सम्मान के लिये बच्चों सहित कुछ युवा अपने बेहतरीन कार्यों के लिये पुरस्कृत किये जाते हैं। वर्ष के खास विषय पर आधारित एक अलग पोस्टर हर साल डिजाइन किया जाता है और पूरी दुनिया में लोगों के बीच वितरित किया जाता है। पोस्टर इस तरह से डिजाइन किये जाते हैं जिससे लोगों और बच्चों को और किताबें पढ़ने के लिये बढ़ावा दिया जा सके।

विश्व पृथ्वी दिवस

पृथ्वी दिवस एक वार्षिक आयोजन है जिसे 22 अप्रैल को दुनिया भर में पर्यावरण संरक्षण के लिए आयोजित किया जाता है। इसकी

स्थापना अमेरिकी सीनेटर जेराल्ड नेल्सन ने 1970 में एक पर्यावरण शिक्षा के रूप की थी। अब इसे 192 से अधिक देशों में प्रति वर्ष मनाया जाता है। यह तारीख उत्तरी गोलार्द्ध में वसन्त और दक्षिणी गोलार्द्ध में शरद का मौसम है।जब बार से चुनगी आते थे संयुक्त राष्ट्र में पृथ्वी दिवस को प्रत्येक वर्ष *मार्च विषुव* (वर्ष का वह समय जब दिन और रात बराबर होते हैंपर मनाया जाता है (, यह अक्सर 20 मार्च होता है, यह एक परम्परा है जिसकी स्थापना शान्ति कार्यकर्ता जॉन मक्कोनेल के द्वारा की गयी। यह पृथ्वी का बड़ा ही मनाया जाने वाला दिवस है|

क्षेत्रीय संगठन मंत्री का विद्यालय प्रवास

आज दिनांक २७ अप्रैल को विद्यालय में क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्रीमान डोमेश्वर साहू जी एवं मेरठ प्रान्त प्रदेश निरीक्षक श्रीमान विशोक कुमार जी का प्रवास हुआ। माननीय संगठन मंत्री जी ने अपने उदबोधन में-विद्या भारती का परिचय देते हुए विद्याभारती के लक्ष्य के विषय में बताया,भैया-बहिनों में राष्ट्र भक्ति, पीड़ितों के प्रति संवेदना के भाव विद्यालय स्तर पर किस प्रकार जागृत किये जा सकते हैं ?हम अपनी शैक्षणिक योग्यताएं किस प्रकार बढ़ा सकते है? और 21वीं सदी के कौशलों का विकास जैसे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की। प्रदेश निरीक्षक जी ने- पढ़ाने के समय जॉयफुल लर्निंग कैसे हो ? भैया/ बहनों में सामाजिक समरसता का विकास कैसे हो, पाठ्यक्रम को रुचिकर कैसे बनाया जाए ? आदि विषयों पर चर्चा की।